© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

महाकवि भास और अनंगहर्ष का व्यक्तित्त्व एवं कर्तृत्त्व

एकता यादव
JRF शोधच्छात्रा,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

नाट्य परम्परा में महाकवि 'भास' अग्रणी स्थान पर प्रतिष्ठित हैं। यद्यपि भास के समय में नाटककारों की एक सुदृढ़ शृंखला थी, जिसमें शूद्रक, कालिदास, विशाखदत्त, हर्ष, भट्टनारायण तथा भवभूति आदि ने अनेक नाटकों की रचना की परन्तु फिर भी नाट्य–परम्परा में भास प्रथम नाटककार हैं।

महाकवि भास के जीवनवृत्त के सम्बन्ध में विवरण प्राप्त नहीं होता है। इन्होंने अपने नाटकों में भी अपने सम्बन्ध में कुछ निर्देश नहीं दिया है। इनकी कृतियों के आधार पर भास के जीवनवृत्त के सम्बन्ध में विद्वानों का कहना है कि ''प्रतिज्ञायौगन्धरायण'' में मन्त्रित्व के सफल अंकन से ये परम राजभक्त मन्त्री प्रतीत होते हैं। जन्म स्थान के सम्बन्ध में इनके रूपकों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उज्जयिनी और मगध से इनका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, जिनमें एक इनकी जन्मभूमि एवं एक कर्मभूमि सम्भावित है। नेमिचन्द्रशास्त्री उज्जयिनी को जन्मभूमि एवं राजगृह को कर्मभूमि होने का उल्लेख करते हैं।[1]

स्थितिकाल :

महाकवि भास के स्थितिकाल के सम्बन्ध में निश्चित जानकारी नहीं प्राप्त होती है। इस सम्बन्ध में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं किन्तु विद्वानों के अन्तरंग एवं बहिरंग प्रमाणों के आधार पर इनका समय ई0पू0 पाँचवीं–तीसरी शताब्दी का मध्य मानते हैं, जैसे बलदेव उपाध्याय,[2] चन्द्रशेखर पाण्डेय एवं व्यास ने चौथी एवं

1. महाकवि भास– नेमिचन्द्र शास्त्री, पृ0–17
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय, पृ0–491

पाँचवीं शताब्दी ई0पू0,[3] नेमिचन्द्र शास्त्री के पुसालकर द्वारा प्रतिपादित समय (ई0पू0 5–6 शताब्दी) का खण्डन करते हुए ई0पू0 चौथी शताब्दी[4] तथा कपिलदेव द्विवेदी 450 ई0पू0 के लगभग समीचीन मानते हैं।[5]

कर्तृत्त्व :

महाकवि भास की रचनाओं को सन् 1909 ई0 में महोपाध्याय श्री टी0 गणशास्त्री ने ट्रावनकोर राज्य से प्राप्त किया था[6] तथा 1912 ई0 में इन्हें प्रकाशित किया था।[7] इनके नाटकों को कथा–स्रोत की दृष्टि से चार भागों में बाँटा जा सकता है –

(क) रामायण मूलक

(ख) महाभारत मूलक

(ग) उदयन कथामूलक

(घ) कल्पना मूलक

(क) रामायण मूलक – इसमें दो नाटक हैं – 'प्रतिमानाटक' एवं 'अभिषेक नाटक' ।

प्रतिमानाटक में सात अंक हैं। इसमें राम–वन–गमन से लेकर रावणवध तक की कथा वर्णित है।

अभिषेक नाटक में छः अंक हैं। इसमें रामायण के किष्किन्धा काण्ड से लेकर लंका काण्ड तक की कथा का संक्षेप में वर्णन है। अन्त में रावण वध के पश्चात् राम राज्याभिषेक की कथा का भी वर्णन किया गया है।

(ख) महाभारत मूलक – महाभारत कथाश्रित सात नाटक हैं –बालचरित, ऊरूभंग, दूतवाक्य, मध्यमव्यायोग, दूतघटोत्कच, कर्णभार तथा पंचरात्र।

'बालचरित' नाटक में पाँच अंक हैं। इनमें कृष्ण के जन्म से लेकर कंसवध तक की कथा वर्णित है।

'ऊरूभंग' एकांकी नाटक है। इसमें द्रौपदी के अपमान के प्रतिकार– स्वरूप भीम के द्वारा दुर्योधन की जंघा को **भंग** करके उसका वध करने की कथा वर्णित है।

---

3. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा – पाण्डेय एवं व्यास, पृ0–79
4. संस्कृत के ऐतिहासिक नाटक –डॉ0 श्याम वर्मा, पृ0–106
5. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास –कपिलदेव द्विवेदी, पृ0–285
6. तदैव, पृ0–275
7. संस्कृत साहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय, पृ0–484

'कर्णभार' भी एकांकी नाटक है। इसमें कर्ण से ब्रह्मचारी वेशधारी इन्द्र के कवच–कुण्डल माँगने तथा कर्ण द्वारा उसे दान देने की कथा है।

'मध्यमव्यायोग' एकांकी नाटक है। नाटक में भीम के द्वारा घटोत्कच के हाथ से एक ब्राह्मण पुत्र को बचाने की कथावस्तु है।

'दूतघटोत्कच' भी एकांकी नाटक है। इसमें अभिमन्यु के मृत्यु के पश्चात् श्रीकृष्ण द्वारा घटोत्कच को दूतरूप में धृतराष्ट्र के पास भेजने तथा दुर्योधन द्वारा उसका अपमान करने इत्यादि की कथा का वर्णन किया गया है।

'दूतवाक्य' यह भी एकांकी नाटक है। महाभारत के युद्ध से पूर्व श्रीकृष्ण का पाण्डवों के दूत के रूप में दुर्योधन की सभा में सन्धि प्रस्ताव लेकर जाने तथा विफल लौटने की कथा इस नाटक में वर्णित है।

'पंचरात्र' में तीन अंक हैं। महाभारत की एक घटना को लेकर कवि ने इस नाटक को कल्पित रूप में वर्णित है। द्रोण ने दुर्योधन से पाण्डवों को आधा राज्य देने के लिए कहा, तो दुर्योधन ने प्रतिज्ञा की कि यदि पाण्डव पांच रात्रि के अन्दर मिल जायेंगे तो उन्हें आधा राज्य दे दूँगा। द्रोण के प्रयत्न से पाण्डव मिलते हैं और दुर्योधन उन्हें आधा राज्य दे देता है।

(ग) **उदयकथा मूलक–** इसके अन्तर्गत दो नाटक हैं– प्रतिज्ञायौगन्धरायण तथा स्वप्नवासवदत्तम्।

'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' में चार अंक हैं। इसमें उदयन और वासवदत्ता के प्रेम और विवाह का वर्णन है। इसमें उज्जयिनी नरेश महासेन द्वारा उदयन को बन्दी बनाने तथा उदयन के मन्त्री यौगन्धरायण द्वारा उसे मुक्त कराने हेतु ली गयी दृढ़ प्रतिज्ञा एवं उनकी नीतिमत्ता का वर्णन किया गया है।

'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में छः अंक हैं। इस नाटक में शत्रु द्वारा अपहृत उदयन के राज्य को पुनः प्राप्त कराने हेतु मन्त्री यौगन्धरायण द्वारा लावाणक ग्राम के अग्निकाण्ड में वासवदत्ता के जलकर मर जाने की मिथ्या अफवाह फैलाने एवं मगधराज की सहायता लेने हेतु उदयन का विवाह मगधराज दर्शक की बहन पद्मावती से कराने की कथा वर्णित है।

(घ) **कल्पना मूलक–** इसमें दो नाटक हैं– दरिद्र चारूदत्त और अविमारक।

'दरिद्र चारूदत्त' में चार अंक हैं। इस नाटक में निर्धन किन्तु उदार–चरित ब्राह्मण चारूदत्त एवं वसन्तसेना नामक वेश्या की कथा का वर्णन किया गया है।

'अविमारक' में चार अंक हैं। नाटक में राजकुमार अविमारक तथा राजा कुन्ति भोज की पुत्री कुरंगी की प्रणय कथा वर्णित है।

अनंगहर्ष–

नाटककार **अनंगहर्ष** के जीवनवृत्त के विषय में कुछ भी निश्चित नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इनके द्वारा रचित 'तापसवत्सराज' की भूमिका में नामादि संकेत के अतिरिक्त अन्यत्र कोई उल्लेख नहीं मिलता है। नाटक की प्रस्तावना में वर्णित नटी और सूत्रधार के संवाद से यह ज्ञात होता है कि अनंगहर्ष राजपुत्र थे तथा इनके पिता का नाम नरेन्द्रवर्धन था। 'मातृराज' इनका उपनाम था।[8]

आचार्य बलदेव उपाध्याय का मानना है कि माउराज ही मातृराज हैं। अतः अनंगहर्ष 'मातृराज' या 'माउराज' एक ही व्यक्ति के द्योतक हैं। इनके अनुसार 'माउराज' मातृराज का ही असली नाम है।[9] संस्कृत साहित्यकार वाचस्पति गैरोला ने अनंगहर्ष और मायुराज दोनों का उल्लेख करते हुए तापसवत्सराज और उदात्तराघव दोनों को ही उनकी रचना स्वीकार करते हुए कहा है कि अनहर्ष 'मातृराज' और 'मायुराज' दोनों सम्भवतः एक ही व्यक्ति थे।[10]

उपर्युक्त मन्तव्यों से स्पष्ट होता है कि मायुराज, माउराज ही संस्कृत के मातृराज हैं और 'अनंगहर्ष मातृराज' ही नाटककार का सम्पूर्ण नाम है।

स्थिति काल–

डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी अनंगहर्ष का समय लगभग 800 ई0 के लगभग स्वीकार करते हैं।[11] वाचस्पति गैरोला अनंगहर्ष का स्थिति काल भवभूति और आनन्दवर्धन के मध्य आठवी शताब्दी स्वीकार करते हैं।[12] आचार्य बलदेव उपाध्याय अनंगहर्ष का समय अष्टम शतक के उत्तरार्द्ध में स्वीकार करते हैं।[13] प्रायः विद्वानों के द्वारा यही स्थितिकाल स्वीकार किया गया है।

---

8. तापसत्वसराज–डॉ0 रामजी उपाध्याय, पृ0 2
9. संस्कृत साहित्य का इतिहास–बलदेव उपाध्याय, पृ0 554
10. संस्कृत साहित्य का इतिहास –वाचस्पति गैरोला, पृ0 690
11. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास–कपिलदेव द्विवदी, पृ0 443
12. संस्कृत साहित्य का इतिहास –वाचस्पति गैरोला, पृ0 690
13. संस्कृत साहित्य का इतिहास –बलदेव उपाध्याय, पृ0 555

कर्तृत्त्व :

अनंगहर्ष 'मातृराज' जिन्हें साहित्य में मायुराज के नाम से भी अभिहित किया गया है, उनकी नाट्य–साहित्य में दो कृतियाँ प्रसिद्ध हैं– (1) तापसवत्सराज, (2) उदात्तराघव।

'तापसवत्सराज' में छः अंक हैं। यह नाटक उदयन कथाश्रित है। इसमें राजा उदयन का वासवदत्ता के लावाणक नामक ग्राम में जलकर मर जाने का समाचार सुनकर खिन्न होना, उदयन का तापस वेश धारण कर प्रयाग में आत्महत्या के लिए उद्यत होना, विदूषक और रूमण्वान् के प्रयासों से राजा को रोकना, तापस वेशधारी उदयन का पद्मावती से मिलन, उदयन के लिए पद्मावती का तापसी वेश धारण करना, पद्मावती का उदयन से विवाह, कुंजरक द्वारा रूमण्वान् की विजय का वर्णन तथा अन्त में सभी के मिलन की कथा वर्णित है।

'उदात्तराघव' अनंगहर्ष की यह रचना यद्यपि उपलब्ध नहीं है, किन्तु संस्कृत नाट्य–साहित्य में कभी यह लोकप्रिय थी। विद्वानों ने इसके श्लोकों को उदाहरणों के रूप में प्रस्तुत किया है। आचार्य धनंजय ने दशरूपक में वस्तु–सूचना के उदाहरण में उदात्तराघव की संक्षिप्त कथावस्तु का संकेत दिया है– पिता की आज्ञा को माला के समान शिर पर धारण करके राम वन चले गए। राम की भक्ति के कारण भरत ने माता कैकेयी सहित समस्त राज्य को छोड़ दिया। राम ने अपने अनुचर और विभीषण दोनों को बड़ी सम्पत्ति प्राप्त करा दी और उद्धत आचरण वाले रावण आदि समस्त शत्रुओं को नष्ट कर दिया।[14]

इससे स्पष्ट है कि अनंगहर्ष का यह नाटक इस समय अपने समय रूप में भले ही उपलब्ध नहीं है, किन्तु लक्षण ग्रन्थकारों द्वारा प्रशंसनीय उदात्तराघव नाटक रामायण कथाश्रित नाटकों में अपना गौरवपूर्ण स्थान रखता है।

---

[14]. दशरूपक– श्रीनिवासशास्त्री, पृ0 208